पाठ

शब्द भंडार

भाषा में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों के समूह को 'शब्द-भंडार' कहा जाता है।

कैसे बढ़ता है भाषा का शब्द भंडार?

किसी भाषा में अनेकानेक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ये शब्द उस भाषा के भी होते हैं तथा अन्य भाषाओं से भी उसमें आ जाते हैं। भाषा में तकनीक व समय के साथ कुछ शब्द चलन में आते हैं। इस प्रकार भाषा का शब्द भंडार बढ़ता जाता है।

आइए, शब्द-भंडार को बढ़ाने में सहायक पर्यायवाची, विलोम, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, अनेकार्थी, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों से परिचय करें–

1. पर्यायवाची शब्द

जलज
पंकज

नीरज
सरोज

निकेतन
आलय

गृह
सदन

ऊपर कमल और घर के चित्रों के आस-पास उनके अन्य नाम दिए गए हैं। ये शब्द उनका लगभग समान अर्थ दे रहे हैं। ऐसे शब्दों को 'पर्यायवाची' या 'समानार्थी' कहा जाता है। इस प्रकार–

लगभग समान अर्थ देने वाले शब्दों को समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहा जाता है।

पूरी तरह समान न कहकर लगभग समान कहने के पीछे कारण– पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग र जगह नहीं किया जा सकता; जैसे– धरती और भूमि समानार्थी शब्द हैं, किंतु दोनों का एक-दूसरे की गह प्रयोग नहीं किया जा सकता;

जैसे– आज का दिन भूमि-पूजन के लिए सही है। (छोटे भूखंडों तथा खेत की भूमि के अर्थ में)

पूरी धरती आज प्रदूषण से त्रस्त है। (पूरी पृथ्वी, पूरे संसार के अर्थ में)

र्यायवाची शब्दों की विशेषताएँ–

1. पर्यायवाची शब्दों में अर्थ व प्रयोग की दृष्टि से थोड़ा-सा अंतर होता है; जैसे– हत्या व वध दोनों के अर्थ व प्रयोग में भी अंतर होता है;

   जैसे– श्रीकृष्ण ने अनेक राक्षसों का वध किया। (समाज की भलाई के लिए किसी को मारना)

   हत्या के आरोपी को मृत्युदंड दिया गया। (गैरकानूनी ढंग से किसी को मार डालना)

अर्थ में थोड़ा अंतर होने के कारण यहाँ वध और हत्या का एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

2. पर्यायवाची शब्दों में लिंग का अंतर भी हो सकता है; जैसे– सवेरा व प्रातःकाल (पुल्लिंग) व सुबह (स्त्रीलिंग), समीर व पवन (पुल्लिंग), हवा (स्त्रीलिंग) आदि।

कुछ प्रमुख पर्यायवाची शब्द–

शब्द	पर्यायवाची	शब्द	पर्यायवाची
अंधकार	– तम, तिमिर, अँधेरा	इच्छा	– अभिलाषा, आकांक्षा, कामना
अंत	– समापन, समाप्ति, इति	ईर्ष्या	– जलन, कुढ़न, डाह
अंबर	– नभ, व्योम, शून्य	उज्ज्वल	– उजला, कांतिमान, दीप्त
अध्यापक	– शिक्षक, गुरु, आचार्य	उत्थान	– उन्नति, उत्कर्ष, उन्नयन
अभिमान	– गर्व, दर्प, घमंड	उद्यान	– उपवन, वाटिका, बाग
अमृत	– सोम, सुधा, पीयूष	उदार	– दयालु, सुहृदय, सुहृद
अज्ञानी	– अज्ञ, मूढ़, मूर्ख	उपयुक्त	– अनुरूप, योग्य, सही
आग	– अग्नि, अनल, ज्वाला	ऊटपटाँग	– बेतुका, बेढंगा, अटपटा
आदर	– मान, सम्मान, प्रतिष्ठा	ऊर्मि	– लहर, तरंग, हिलोर
आशीर्वाद	– आशीष, शुभकामना, आशीर्वचन	ऋषि	– महर्षि, मुनि, मनीषी
आँख	– नयन, नेत्र, चक्षु	एकता	– ऐक्य, एकत्व, एका
ऐश्वर्य	– वैभव, संपन्नता, समृद्धि	डगर	– पंथ, पथ, बाट, डगर
ओछा	– अधम, नीच, तुच्छ	ढोंग	– दिखावा, आडंबर, पाखंड
और	– एवं, तथा, व	तपस्या	– तप, तपश्चर्या, साधना
औचक	– अकस्मात्, अचानक, एकाएक	त्रुटि	– अशुद्धि, चूक, कमी
कपट	– छल, ढोंग, प्रपंच	त्वचा	– खाल, चर्म, चमड़ी
किनारा	– कूल, तट, तीर	दिन	– दिवस, वासर, वार
किरण	– अंशु, मरीचि, रश्मि	दैत्य	– असुर, दानव, राक्षस
कृतार्थ	– कृतज्ञ, आभारी	ध्वनि	– रव, नाद, घोष
खिड़की	– गवाक्ष, झरोखा, वातायन	धरती	– भू, भूमि, वसुधा
खोज	– अनुसंधान, आविष्कार, अन्वेषण	नव	– नया, नवीन, नूतन
खोह	– कंदरा, गुहा, गुफ़ा	निपुण	– कुशल, दक्ष, प्रवीण
गरमी	– तपन, आतप, ताप	नींद	– निद्रा, झपकी, तंद्रा

गागर	– घट, घड़ा, मटका	पतन	– अवनति, नाश, ह्रास
गाय	– गैया, गऊ, गौ	प्रकाश	– आभा, आलोक, प्रभा
घृणा	– घिन, चिढ़, विरक्ति	प्रभात	– सवेरा, भोर, प्रातः
घोषणा	– अधिसूचना, उद्घोषणा, मुनादी, ढिंढोरा	परमात्मा	– प्रभु, परमेश्वर, ईश्वर
चंचल	– अस्थिर, चुलबुला, नटखट	पवित्र	– पावन, पुनीत, निर्मल
चाँदनी	– चंद्रिका, चंद्रप्रभा, कौमुदी	पूजा	– वंदन, आराधन, अर्चन
छींटाकशी	– कटाक्ष, व्यंग्य, तंज	फूल	– सुमन, कुसुम, प्रसून
छोर	– किनारा, कोना, सिरा	फूहड़	– असभ्य, अशिष्ट
जगत	– संसार, विश्व, लोक	मूर्ख	– मूढ़, मतिमंद, अज्ञ
जलपान	– अल्पाहार, नाश्ता, कलेवा	मर्मज्ञ	– ज्ञाता, पारंगत, विशेषज्ञ
झरना	– प्रपात, निर्झर, उत्स	बाधा	– अड़चन, अवरोध, रुकावट
झोपड़ी	– कुटिया, कुटी, कुटीर, झुग्गी	बुद्धि	– मति, मेधा, प्रज्ञा
टेढ़ा	– तिर्यक, तिरछा, वक्र	भद्र	– शालीन, शिष्ट, सभ्य
ठग	– वंचक, धूर्त, खल	भोजन	– आहार, खाद्य, खाना
यात्रा	– भ्रमण, सैर, पर्यटन	वायु	– अनिल, समीर, हवा
युद्ध	– रण, समर, संग्राम	सदा	– सतत, सर्वदा, नित्य
रात्रि	– रात, रजनी, निशा	समुद्र	– सागर, सिंधु, नदीश
व्यथा	– दुख, वेदना, पीड़ा	हाथ	– कर, हस्त, पाणि
हाथी	– गज, हस्ती, कुंजर	हर्ष	– आनंद, आमोद, प्रसन्नता

पाठ एक नज़र में

- लगभग समान अर्थ देने वाले शब्द 'समानार्थी' या 'पर्यायवाची' कहलाते हैं।
- पर्यायवाची शब्दों में अर्थ व प्रयोग की दृष्टि से थोड़ा-सा अंतर भी होता है। इसी कारण 'हत्या' व 'वध' जैसे समानार्थक शब्दों का प्रयोग एक-दूसरे के स्थान पर नहीं किया जा सकता।
- एक ही शब्द के पर्यायवाची शब्दों के लिंग अलग-अलग हो सकते हैं; जैसे- हवा व वायु (स्त्रीलिंग), पवन व समीर (पुल्लिंग) आदि।